

सलोनी बेटी श्री खण्डि आउ सचारी॥

चरण दूलह जी तूं पटमहषी शील स्नेह सुकुमारी॥

सकल सहचरी मुकुटमणी तूं जननी जनक दुलारी॥

दासी वत्सल दिलिबर ब्रिचिड़ी रस निधि रूप उज्यारी॥

गरीबि संगिनि प्रेम उमंगनि जेद्रियुनि जीअ जियारी॥

लव कुश लाड़ लड़ाइ छिन छिन श्री मैथिलि मनठारी॥

विनय सां वसि कयइ विचक्षणी बृज जा प्रीतम प्यारी॥

कथा कुंज जी नित्य निवासिणि घुमी भाव फुलवाड़ी॥

सुखदेवी अ सुकुमारि सलोनी रोचल राज कुमारी॥

स्नेह सिंधु में मगनु रही नितु ब्राह्मिर खेल खिलारी॥

सतिगुर नानक नेह निवाजी परा प्रेम अवतारी॥

श्री अविनाशिका कुरिब सां पुकारे प्रेम मगनु महतारी॥

जुगां जुग जीओ साईं अमड़ि प्यारा जन्म साध हमारी॥